International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-06-2019; Accepted: 06-07-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 5; July 2019; Page No. 06-09

मध्य प्रदेश के अनुसूचित जाति के बच्चों के कुपोषित होने के वास्तविक लक्षणों एवं कारणों का अध्ययन : छिन्दवाड़ा जिला की अमरवाड़ा तहसील के विशेष सन्दर्भ में

अशोक कुमार डेहरिया

पी.एच.डी. शोधार्थी, समाजकार्य एवं समाजशास्त्र विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, भारत।

सारांश

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति के बच्चों के कुपोषित होने के वास्तविक लक्षणों का विस्तारपूर्वक अध्ययन कर विभिन्न कारणों का पता लगाना। ताकि भविष्य में किये जाने वाले कुपोषण से सम्बंधित अध्ययन एवं नीति निधार्रण के लिए सुझाव दिए जा सकें। इसके लिए विभिन कुपोषण से सम्बंधित प्रश्नों के माध्यम से आंकड़े एकत्रित कर एवं सांख्यिकीय विशलेषण कर निष्कर्ष निकले गए हैं । जो सर्वेक्षित परिवारों की एवं कुपोषित बच्चोँ की वास्तविक स्तिथि को दर्शाते हैं। इस अध्ययन के लिए मध्यप्रदेश के छिन्दवाड़ा जिला की अमरवाड़ा तहसील से 10 अनुसूचित जाति बाहुल्य ग्राम पंचायतों से दैव निदर्शन विधि के माध्यम से 400 परिवारों का चयन कर पाए गए 100 कुपोषित बच्चोँ का अध्ययन किया गया है।अध्ययन के दौरान कुपोषण के कई लक्षण पाए गये जैसे बच्चों के विकास की गति धीमी होना, ऐड़ी और पांवों में सूजन आना, बच्चोँ का चेहरा चंद्राकार दिखाई देना, बालों का रंग लाल या भूरा दिखाई देना, अत्यधिक मात्रा में बालों का झड़ना, भूख खत्म होना, वजन सामान्य बच्चोँ की अपेक्षा कम होना, खेल-कूद में जल्दी थक जाना और चेहरा सूखा और खराश दिखाई देना। इसी प्रकार बच्चोँ में कुपोषण के अनेक कारण पाए गये जैसे माँ का कुपोषित होना, माँ के गर्भावस्था के दौरान अतिरिक्त पोषक आहार न मिलना, अधिक बच्चोँ का जन्म देना, माँ का दो बच्चोँ के बीच कम अंतर रखना, माँ के कम आयु में माँ बन जाना, बच्चोँ को उपयुक्त मात्रा में भोज्य तत्व का न मिलना एवं अस्वस्थ्यकर वातावरण का होना।

मूल शब्द: अनुसूचित जाति के बच्चे, कुपोषण, कुपोषण के लक्षण, कुपोषण के कारण, अमरवाड़ा तहसील

प्रस्तावना

कुपोषण कोई एक देश या राज्य की समस्या नहीं है बल्कि पूरे विश्व की समस्या बन गयी है। जहाँ देश खाद्य समस्या से निपटने के लिए अधिक कृषि उत्पादन पर जोर दे रहा हैं और इसमें सफलता भी मिली है। भारत दशकों पहले ही कृषि उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर चुका है और कृषि उत्पादन प्रतिवर्ष बढ़ता भी जा रहा है। लेकिन इसके बावजूद भी कुपोषण की समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।और खासकर उन राज्यों में जहाँ अनुसूचित जाति एवं जनजातियों की जनसँख्या अधिक है। यह अध्ययन मध्यप्रदेश के सन्दर्भ में किया गया है जहाँ कृषि के क्षेत्र में अधिक उत्पादन एवं उच्च कृषि विकास दर के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री को कृषि कर्मण आवार्ड से सम्मानित किया गया है। लेकिन हैरानी की बात तो ये है की इसी प्रदेश में लगभग 50 प्रतिशत से भी अधिक अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बच्चे कई तरह से कुपोषण के शिकार हैं आखिर वे कौन से कारण हैं एवं लक्षण हैं जो इस वर्ग के बच्चोँ को कुपोषण के गर्त में धकेल रहे हैं, इसका अध्ययन इस शोध में किया गया है।

साहित्यों का अध्ययन:

मोहन और अन्य (2016): ने राजस्थान के चार (उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और राजसमंद) प्रमुख अदिवासी बाहुल्य जिलों में प्रवासी जनजातीय समुदायों में कुपोषण का अध्ययन कर पाया की इन समुदायों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने की वजह से इन प्रवासी समुदायों की महिलाएं काम में व्यस्त रहती हैं उनके पास इतना समयऔर शक्ति नहीं रह जाती की वे अपने बच्चों को पर्याप्त समय देखभाल करने में दे पायें, इसके कारण इन परिवारों के बच्चे गंभीर रूप से कुपोषण का शिकार हो जाते हैं। और इन परिवारों की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर रहती है की वो अपने बच्चों को पोष्टिक आहार तो क्या साधारण भोजन भी पेट भर नहीं खिला सकते है। शर्मा रमेश (2014): ने बच्चोँ के देखभाल पर अध्ययन कर बताया की ऐसे बच्चे, जिनकी देखभाल जन्म से ही ठीक प्रकार से नहीं हो पाती, उनमें हमेशा कुपोषण होने की सम्भावना बनी रहती है। जिन बच्चों की देखभाल करने वाला कोई नहीं होता, और भूख के कारण उनकी आहार आपूर्ति नहीं हो पाती और वह कुपोषण के शिकार हो जाते हैं। इसी प्रकार गुप्ता और अन्य (2013): ने प्रसिद्ध अर्थशास्त्री (अरविन्द पनागरिया) के तर्क और बच्चोँ के विकास (stunt) मापन की पद्धति पर तर्क सहित जवाब देते हुए बताया है की बच्चोँ के मापन पद्धति पर जोर न देकर उनके परिवार की आधारभूत समस्यायों पर ध्यान दिया जाना चाहिए जो की गरीबी और भुखमरी है। अरविन्द पनागरिया ने विभिन्न देशों (जापान, सिंगापुर, सयुंक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, नीदरलैंड, नाइजीरिया और उप-सहारन अफ्रीका) के द्वतियकआंकड़ों के आधार पर निष्कर्ष निकाल कर भारत के सन्दर्भ में नई मापन पद्यति के आधार पर ऊंचाई, वजन, मृत्यू दर के बीच सम्बन्ध को स्थापित करने को कहा जो गुप्ता और अन्य लोगों के मत से काफी भिन्न है। इन्होंने (गुप्ता और अन्य) भारत में अध्ययन करके बताया की भारत की मुख्य समस्या गरीबी, भुखमरी, महिलाओं का कमजोर सामजिक स्तर और कमजोर सार्वजनिक कार्यक्रम जैसे तत्वों को जिम्मेदार ठहराया है। सबरवाल ***;2011द्धरु*** ने जातीय और धार्मिक समूहों में कुपोषण के सम्बन्ध को स्थापित करने के लिए प्रमुख तीन चरों (आय , शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की प्रप्ति) को लेकर तार्किक प्रतिगमन (***सवहपेजपब तमहतमेपवदद्ध*** विधि का इस्तेमाल कर सिद्द किया है की विभिन्न जातीय और धार्मिक समूहों में कुपोषण की स्थिति समान नहीं है। सिर्फ गरिबी का कारण कुपोषण होना सभी जातीय समूहों में लागू नहीं होता क्योंकि इसके अलावा भी और भी तत्व हैं जिनको नजर अंदाज नहीं किया जा सकता । ये तार्किक प्रतिगमन विधि के माध्यम से सिध्य करके बताती हैं शिक्षा, स्वास्थ्य और आय का स्तर सामूहिक रूप से कुपोषण को कम और बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। महरोत्रा संतोष (2006): ने "बाल कुपोषण और दक्षिण एशिया में लिंग आधारित

भेदभाव'' पर अध्यन कर पाया की भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में बच्चों की कुपोषण की दर उप-सहारा अफ्रीका से भी अधिक है। और यह सीधे दक्षिण एशिया में महिलाओं के खिलाफ भेदभाव से संबंधित है। इसी प्रकार देश की सबसे बड़ी समस्या लिंग भेद है जिसकी वजह से देश कुपोषण के जाल से बाहर निकल ही नहीं पा रहा है जो सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पाकिस्तान, बंगलादेश और दक्षिण एशिया जैसे देशों में भी कोई कम नहीं है।

कुपोषित बच्चों के वास्तविक लक्षण संबंधी जानकारी:

सारणी क्र. 1: क्या आपके कुपोषित बच्चों के विकास की गति धीमी होती है?

हाँ	नही	कुल
69%	31%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

भारत में पांच वर्ष से कम आयु के 21 प्रतिशत बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। देश में बाल कुपोषण 1998-2002 के बीच 17.1 प्रतिशत था, जो 2012-16 के बीच बढ़कर 21 प्रतिशत हो गया। जब हम सर्वेक्षित परिवारों से प्राप्त आंकड़े देखते हैं तो इन परीवारों के बच्चे काफी कमजोर, दुबले-पतले एवं कम ऊंचाई वाले पाए गए क्योंकि इन परिवारों की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर होने की वजह से वे अपने बच्चों की ठीक से परवरिस नहीं कर पाते हैं। 100 परिवारों में से 69% परिवारों ने बताया की उनके बच्चों की विकास की गति काफी धीमी है। जबकि 31% परिवारों ने बताया की उनके बच्चों की विकास की गति सामान्य है।

सारणी क्र. 2: क्या आपके बच्चों की ऐड़ी और पांवों में हमेशा सूजन रहती है ?

हाँ	नहीं	कुल
11%	81%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

ऐड़ी की हड्डी बढ़ना या सूजन आना एक ऐसी स्थिति है जिसमें ऐड़ी और पंजे के बीच के हिस्से में कैल्शियम के जमा होने के कारण हड्डी जैसा उभार हो जाता है। यह समस्या ज्यादातर ऐड़ी के आगे के हिस्से में शुरू होती है और फिर पांव के अन्य हिस्सों को प्रभावित करती है। सर्वेक्षण के दौरान 11% परिवारों ने बताया की उनके बच्चों की ऐड़ी और पैरों में हमेशा सूजन रहती है जबकि 81% परिवारों बताया की इस प्रकार की कोई समस्या उनके बच्चों में नही होती है।

सारणी क्र. 3: क्या आपके बच्चों का चेहरा चंद्राकर दिखाई देने लगता है ?

हाँ	नहीं	कुल
14%	86%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

कुपोषण एक ऐसा चक्र है जिसके चंगुल में बच्चे अपनी मां के गर्भ में ही फंस जाते हैं। उनके जीवन की नियति दुनिया में जन्म लेने के पहले ही तय हो जाती है। यह नियति लिखी जाती है गरीबी और भुखमरी की स्याही से। इसका रंग स्याह उदास होता है और स्थिति गंभीर होने पर जीवन में आशा की किरणें भी नहीं पनप पाती हैं। कुपोषण के मायने होते हैं आयु और शरीर के अनुरूप पर्याप्त शारीरिक विकास न होना, एक स्तर के बाद यह मानसिक विकास की प्रक्रिया को भी अवरूध्द करने लगता हैं।कुपोषण की वजह से बच्चों में कई प्रकार के लक्षण दिखाई देते हैं उनमे से एक है बच्चों का चेहरा चंद्राकर होना। सर्वेक्षण किये गये परिवारों में से 14% परिवारों ने बताया की उनके बच्चों का चेहरा चन्द्राकर दिखाई देने लगता है जबकि 86% परिवारों ने बताया की उनके बच्चों का चेहरा सामान्य रहता है।

सारणी क्र. 4 क्या आपके बच्चों के बालों का रंग प्रायः लाल या भूरा दिखाई देने लगता है ?

हाँ	नहीं	कुल
67%	33%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

शरीर के लिए आवश्यक सन्तुलित आहार लम्बे समय तक नहीं मिलना ही कुपोषण है। कुपोषण के कारण बच्चों और महिलाओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है, जिससे वे आसानी से कई तरह की बीमारियों के शिकार बन जाते हैं। अत: कुपोषण की जानकारियाँ होना अत्यन्त जरूरी है। कुपोषण प्राय: पर्याप्त सन्तुलित अहार के आभाव में होता है। सर्वेक्षित परिवारों में से लगभग 67% परिवारों ने बताया की उनके बच्चों के बालों का रंग प्रायः लाल एवं भूरा दिखाई देने लगता है जबकि 33% परिवारों ने बताया की उनके बच्चों के बालों का रंग प्रायः सामान्य रहता है।

सारणी क्र. 5: क्या आपके बच्चों के बाल अत्यधिक मात्रा में झड़ने लगते हैं ?

हाँ	नहीं	कुल
79%	21%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

आजकल सिर्फ बड़ों को ही नहीं बल्कि छोटे बच्चों को भी हेयरफॉल की समस्या हो रही है। वैसे तो यह समस्या सही डाइट न लेने के कारण होती है। लेकिन इसके अलावा भी इसके पीछे कई कारण जिम्मेदार हैं। कुपोषित बच्चों के सर्वेक्षण के दौरान लगभग 79% परिवारों ने बताया की उनके बच्चों के बाल अत्यधिक मात्रा में झड़ते हैं जबकि लगभग 21% परिवारों ने बताया की उनके बच्चों के बाल सामान्य रहते हैं उनमें किसी भी प्रकार की बाल झड़ने की प्रक्रिया दिखाई नहीं देती है।

सारणी क्र. 6: क्या आपके बच्चों की भूख ख़त्म हो जाती है ?

हाँ	नहीं	कुल
47%	53%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

पृथ्वी पर किसी भी मनुष्य के लिए सबसे बढ़ी खुशी का क्षण वह होता है जब वो अपनी संतान को जन्म के बाद सबसे पहले अपनी गोद में उठाता है। इसके विपरीत सबसे बड़ी तकलीफ का समय वह होता है जब उन्हें अपने नवजात की खाने की इच्छा कम होती दिखाई देती है। दुनिया के प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों को सर्वश्रेष्ठ सुविधाएं , शिक्षा और पोषण देने का प्रयत्न करते हैं जिससे उनका नन्हा बच्चा एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में विकसित हो। सर्वेक्षित परिवारों में 47% परिवारों ने बताया की उनके बच्चों की भूख गर्मी के दिनों में कम हो जाती है एवं जब उनका स्वास्थ्य ख़राब रहता है तब वे भोजन कम खाते हैं। जबकि 53% परिवारों ने बताया की उनके बच्चों की भूख सामान्य रहती है।

सारणी क्र. 7: क्या आपके बच्चे का वजन सामान्य बच्चों की अपेक्षा कम हो जाता है ?

हाँ	नहीं	कुल
64	36	100

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

माता-पिता अपने शिशु के विकास के बारे में जानने के लिए बेहद उत्सुक रहते हैं। औसत रूप से जन्म के समय नवजात शिशु का वजन 3.2 किलोग्राम से 3.4 किलोग्राम तक होता है, लेकिन ज्यादातर स्वस्थ नवजात शिशुओं का वजन 2.6 किलोग्राम से 3.8 किलोग्राम तक हो सकता है सर्वेक्षित परिवारों में से लगभग 64% परिवार ऐसे पाए गये जिनके बच्चों का वजन सामान्य बच्चों की तुलना में बहुत कम था जबकि 36% परिवारों में बच्चों का वजन सामान्य था।

सारणी क्र. 8: क्या आपका बच्चा सामान्य बच्चों की अपेक्षा खेल-कूद में

जल्दी थक जाता है ?

हाँ	नहीं	कुल
78%	22%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

यदि वास्तव में माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे का विकास स्वस्थ तरीके से हो तो उसके लिए खेलना बहुत आवश्यक है। जो बच्चे कुपोषित होते हैं वो खेल में जल्दी थक जाते हैं सर्वेक्षित परिवारों में से 78% परिवारों ने बताया उनके बच्चे खेलकूद में जल्दी थक जाते हैं जबकि 22% परिवारों के बच्चे सामान्य बच्चों की तरह खेलते रहते हैं एवं थकान महसूस नहीं करते हैं

सारणी क्र. 9: क्या आपके बच्चे का चेहरा सुखा और खराश दिखाई देता है ?

हाँ	नहीं	कुल
83%	17%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

बच्चों की त्वचा बहुत ही कोमल होती है। उस नाजुक त्वचा को चाहिए की माता-पिता उसका खास देखभाल करें। बच्चों की संवदेनशील त्वचा जल्दी ही किसी न चीज से प्रभावित हो सकती है। इसलिए कुछ बातों का खयाल रखना जरूरी हो जाता है। बच्चों को अक्सर त्वचा संबंधी परेशानियां होती रहती हैं । सर्वेक्षण के दौरान 83% बच्चे ऐसे पाए गये जिनके चेहरे सूखे और खराश वाले दिखाई देते थे एवं 17 बच्चे सामान्य स्थिति वाले पाए गए।

बच्चों के कुपोषित होने के कारण:

सारणी क्र. 1: क्या आप जानते हैं , बच्चों के कुपोषित होने का सबसे बड़ा कारण माँ का कुपोषित होना है ?

हाँ	नहीं	कुल
83%	17%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

भारत में खून की कमी या एनीमिया बहुत आम बीमारी है। देश में 6 से 59 माह की आयु वर्ग में हर दस में सात बच्चे खून की कमी का शिकार हैं इनमें चालीस प्रतिशत बच्चे मामूली तौर पर और तीन प्रतिशत बच्चे गंभीर रूप से प्रभावित हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं, युवतियां व बच्चे एनीमिया से ज्यादा पीड़ित हैं। एनएफएचएस के दूसरे सर्वे से तीसरे सर्वे में एनीमिया 74 प्रतिशत से बढ़कर 79 प्रतिशत पाया गया था। मध्यप्रदेश की तस्वीर इस मामले में और भी बदतर है। प्रदेश में 74 प्रतिशत बच्चे एनीमिया से ग्रसित हैं। सर्वे के दौरान भी यही पाया गया की लगभग 83% उत्तरदाताओं ने बताया की बच्चों के कुपोषण होने का सबसे बड़ा कारण उनकी माताओं का कुपोषण होना था क्योंकि इन परिवारों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी जिसकी वजह से ये परिवार खान-पान पर ज्यादा खर्च नहीं कर पाते हैं। जबकि 17% उत्तरदाताओं ने बताया की बच्चों का कुपोषण होने के और भी कारण होते हैं माँ के अलावा ।

सारणी क्र. 2: क्या आप जानते हैं की माँ को गर्भावस्था के दौरान अतिरिक्त पोषक आहार मिलना चाहिए ?

हाँ	नहीं	कुल
95%	5%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

सर्वे के दौरान 95 % उत्तरदाताओं ने बताया की माँ को गर्भावस्था के दौरान अतिरिक्त पोषक आहार मिलना चाहिए जबकि 5% उत्तरदाताओं ने बोला की सामान्य भोजन से भी स्वास्थ्य बच्चे को जन्म दिया जा सकता है।

सारणी क्र. 3: क्या माँ के अधिक बच्चों के जन्म देने की वजह से भी बच्चे कुपोषित हो जाते हैं ?

हाँ	नहीं	कुल
88%	12%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

कुपोषण एक ऐसा चक्र है जिसके चंगुल में बच्चे अपनी मां के गर्भ में ही फंस जाते हैं। उनके जीवन की नियति दुनिया में जन्म लेने के पहले ही तय हो जाती है। अध्ययन के दौरान 88% उत्तरदाताओं ने बताया की माँ के अधिक बच्चों के जन्म देने की वजह से भी बच्चे कुपोषित हो जाते हैं जबकि 12% उत्तरदाताओं ने बताया की बच्चे उनके कमजोर खान-पान रहन-सहन की वजह से भी कुपोषण के शिकार हो जाते हैं ।

सारणी क्र. 4: क्या माँ के दो बच्चों के जन्म के बीच में कम अंतर होने के कारण भी बच्चों में कुपोषण होता है ?

हाँ	नहीं	कुल
85%	15%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

वैसे तो सभी माता-पिता के लिए अपने बच्चे को जन्म देना एक सौभाग्य की बात होती है। वहीं कुछ माता-पिता अपनी आर्थिक स्थिति और सेहत को देखते हुए सिर्फ एक ही बच्चे के साथ रहने में यकीन रखते हैं । लेकिन दूसरे बच्चे को लेकर परिवार का प्रेशर होने के कारण कुछ लोग दूसरे बच्चे की प्लानिंग करने लगते हैं। जिस कारण वो अक्सर यह भूल जाते हैं कि उनके बच्चों के जन्म में कितना अंतर होना चाहिए। सर्वेक्षित परिवारों में से 85% परिवारों ने बताया की माँ के दो बच्चों के जन्म के बीच में कम अंतर होने के कारण भी बच्चों में कुपोषण होता है। जबकि 15% उत्तरदाताओं ने बताया की माँ के दो बच्चों के जन्म के बीच में कम अंतर होने का बच्चों में कुपोषण होना कोई जरुरी नहीं है यदि माँ पूर्ण रूप से स्वस्थ्य है तो।

सारणी क्र. 5: क्या माँ के कम आयु में ही माँ बन जाने के कारण भी बच्चे कुपोषित हो जाते हैं ?

हाँ	नहीं	कुल
88%	12%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

अब तक कम उम्र में मां बनने को केवल विज्ञान ही सही नहीं मानता था, बल्कि इसे ऊर्जा से भी जोड़कर देखा जाता है। कहा जाता है कि यदि इस उम्र में बच्चे नहीं पैदा किए गए तो फिर बच्चे को पैदा करने की ऊर्जा ही नहीं बचती है, जबकि सच तो यह है कि ऊर्जा और ताकत बेहद व्यक्तिगत चीजें हैं। 40 के पायदान की कई महिलाएं 25 साल की किसी लड़की से कहीं ज्यादा ऊर्जावान और दृढ़संकल्प वाली होती हैं। वे घर और बाहर के काम बड़ी आसानी से निपटा लेती हैं। सर्वे के दौरान लगभग 88% उत्तरदाताओं ने बताया की माँ के कम आयु में ही माँ बन जाने के कारण भी बच्चे कुपोषित हो जाते हैं वहीँ 12% उत्तरदाताओं ने बताया की कम उम्र में माँ बनना बच्चों के कुपोषण से कोई सम्बन्ध नहीं होता क्योंकि कम उम्र में माँ अधिक उर्जावान और स्वस्थ्य होती है जो स्वस्थ्य बच्चे को जन्म देती है।

सारणी क्र. 6: क्या बच्चों को उनकी शारीरिक आवश्यकता के अनुकूल उपयुक्त मात्रा में सभी भोज्य तत्व नही मिलते जिसके कारण वे कुपोषित हो जाते हैं ?

हाँ	नहीं	कुल
98%	2%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

विश्व स्वास्थ्य संघठन के अनुसार 462 मिलियन लोग कुपोषण का शिकार हैं और 159 मिलियन बच्चे इससे प्रभावित हैं । 118 देशों में 140 मिलियन स्कूल के बच्चों और 7 मिलियन गर्भवती महिलाएं कुपोषण का शिकार बन रही हैं । व्यक्ति के स्वास्थ को प्रभावित करने वाला सबसे बड़ा कारक शरीर को

मिलने वाला पोषण हैं, क्योंकि शरीर को अच्छे स्वास्थ के लिए संतुलित मात्रा में पोषक तत्वों और ऊर्जा की आवश्यकता होती हैं। सर्वेक्षण के दौरान भी 98% परिवारों ने बताया की बच्चौं को उनकी शारीरिक आवश्यकता के अनुकूल उपयुक्त मात्रा में सभी भोज्य तत्व नही मिलते जिसके कारण वे कुपोषित हो जाते हैं। जबकि 2% परिवारों ने बताया की सामान्य भोजन से भी बच्चे स्वस्थ्य रहते हैं यदि परिवार का एवं रहने का वातावरण अच्छा हो तो।

सारणी क्र. 7: क्या बच्चौं को अपर्याप्त एवं अनुपयुक्त भोजन मिलने के कारण वे कुपोषित हो जाते हैं ?

हाँ	नहीं	कुल
91%	9%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

शरीर के लिए आवश्यक सन्तुलित आहार लम्बे समय तक नहीं मिलना ही कुपोषण है। कुपोषण के कारण बच्चों और महिलाओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है, जिससे वे आसानी से कई तरह की बीमारियों के शिकार बन जाते हैं। अत: कुपोषण की जानकारियाँ होना अत्यन्त जरूरी है। कुपोषण प्राय: पर्याप्त सन्तुलित अहार के आभाव में होता सर्वे के दौरान 91% परिवारों ने बताया की बच्चौं को अपर्याप्त एवं अनुपयुक्त भोजन मिलने के कारण वे कुपोषित हो जाते हैं जबकि 9% परिवारों ने बताया की सामान्य भोजन भी बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है यदि उनको नियमित दिया जाये एवं उनकी परिवरिस अच्छे पारिवारिक वातावरण में की जाए।

सारणी क्र. 8: क्या अस्वस्थ्यकर वातावरण के कारण भी बच्चे कुपोषित हो जाते हैं ?

हाँ	नहीं	कुल
88%	12%	100%

स्रोत: फील्ड सर्वे से प्राप्त प्राथमिक आंकड़े

शोध बताते हैं कि बहुत हद तक कुपोषण भी अस्वच्छता का परिणाम है। ऐसा इसलिये कि संक्रमित जल और अस्वच्छता से उत्पन्न आँत के कीड़ों के विषाणु भोजन के पोषक तत्वों को शरीर में अवशोषित नहीं होने देते, जिससे रोग अवरोधकता कम हो जाती है। परिणामस्वरूप बच्चों का भौतिक विकास नहीं हो पाता। भारत में विश्व की उन्नीस प्रतिशत बाल जनसंख्या है और कुपोषण से पीड़ित कुल बच्चों का एक चौथाई भाग भी भारत में ही है। देश में गन्दगी के कारण अनेक बीमारियाँ फैलती हैं। सर्वे के दौरान लगभग 88% परिवारों ने बताया की अस्वस्थ्यकर वातावरण के कारण भी बच्चे कुपोषित हो जाते हैं । जबकि 12% परिवारों ने बताया की अस्वस्थ्यकर वातावरण के कारण बच्चे कुपोषित नही होते हैं क्योंकि कुछ बच्चों में रोगों से लड़ने की अत्यधिक क्षमता होती है ।

निष्कर्ष:

उपरोक्त विशलेषण से यह निष्कर्ष निकलता है की सर्वेक्षित परिवारों में बच्चे कई तरह से कुपोषित हैं। प्रत्येक बच्चे का कुपोषण का स्तर अलग-अलग है। अध्ययन के दौरान कुपोषण के कई लक्षण पाए गये जैसे बच्चों के विकास की गति धीमी होना, ऐड़ी और पांवों में सूजन आना, बच्चौं का चेहरा चंद्राकार दिखाई देना, बालों का रंग लाल या भूरा दिखाई देना, अत्यधिक मात्रा में बालों का झड़ना, भूख खत्म होना, वजन सामान्य बच्चौं की अपेक्षा कम होना, खेल-कूद में जल्दी थक जाना और चेहरा सूखा और खराश दिखाई देना। इसी प्रकार बच्चौं में कुपोषण के अनेक कारण पाए गये जैसे माँ का कुपोषित होना, माँ के गर्भावस्था के दौरान अतिरिक्त पोषक आहार न मिलना, अधिक बच्चौं का जन्म देना, माँ का दो बच्चौं के बीच कम अंतर रखना, माँ के कम आयु में माँ बन जाना, बच्चौं को उपयुक्त मात्रा में भोज्य तत्व का न मिलना एवं अस्वस्थ्यकर वातावरण का होना।

सुझाव:

1 कुपोषित बच्चौं के परिवारों की आर्थिक उन्नति के साथ-साथ उनके सामाजिक एवं रहन-सहन के वातावरण एवं बच्चे के भविष्य को ध्यान में रखते हुए इन परिवारों के लिए उचित नीतियां बनाई जानी चाहिए।

2 अनुसूचित जाति की महिलाओं को गर्भ के पूर्व एवं गर्भावस्था के दौरान उचित पोषण आहार देने का उचित एवं निश्चित प्रावधान किया जाना चाहिए ताकि भविष्य में उनको और उनके बच्चौं को कुपोषण का शिकार न होना पड़े।

सन्दर्भ:

1ए मोहन और अन्य (2016): “राजस्थान के प्रवासी जनजातीय समुदायों में बाल कुपोषण का अध्ययन” *टव्स्‍ स्‍ छव* 33 (एकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, अगस्त 13, 2016), 73-81.

2ए गुप्ता अरुण और अन्य (2013): “क्या भारत के लिए बच्चों के कुपोषण के आंकड़े अतिरंजित हैं”*ए टवस्‍ ग्स्टप्प्‍ छव* 34 (एकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, अगस्त 13, 2013), 73-77.

3ए शर्मा रमेश (2014): “क्या बच्चों की देखभाल जरुरी है”*ए टव्स्‍ स्5 छव* 35 (एकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, मार्च 10, 2014), 66-77.

4ए सबरवाल निधि सदाना (2011): “जाति धर्म और कुपोषण का सम्बन्ध” *टव्स्‍ ग्स्टप्‍ छव* 50 (एकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली 10, 2011), 16-18.

5ए महरोत्रा संतोष (2006): “बाल कुपोषण और दछिण एशिया में लिंग आधारित भेदभाव” (एकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, मार्च 11, 2006), 912-918.

6ए मध्य प्रदेश सरकार, 2011: ‘जनगणना पुष्तिका जिला छिंदवाडा, गांव और शहर निर्देशिका’ आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, मध्य प्रदेश, भोपाल.

7ए भारत सरकार, 2012-13: ‘वार्षिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण और परिवार कल्याण’ परिवार स्वास्थ्य कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

8ए मध्य प्रदेश सरकार, 2012: ‘मध्य प्रदेश के बच्चौं के स्तर पर प्रतिवेदन’ राज्य योजना आयोग मध्य प्रदेश, भोपाल.